अमर उजाला

नई दिल्ली । सोमवार, 17 जून 2019

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

उत्कृष्टता के विचार को आत्मसात करने की जरुरत है, बहुत लोग उत्कृष्ट बनने के लिए समय तक खर्च नहीं करते।
- बराक ओबामा

एक तरफ अस्पतालों में खुद डॉक्टर ही सुरक्षित नहीं हैं, दूसरी ओर, बिहार के मुजफ्फरपुर में डॉक्टरों के अस्पतालों में न होने के कारण लगातार बच्चों की मौतें हो रही हैं।

अस्पताल और मौतें

बिहार में पिछले करीब पंद्रह दिनों में एईएस यानी एक्यूट इंसेफेलाइटिस सिंड्रोम से, जिसे वहां चमकी बुखार भी कहा जा रहा है, लगभग सौ बच्चों की मृत्यु सिर्फ मर्मांतक ही नहीं है, बल्कि यह चिकित्सा और उससे जुड़ी ढांचागत सुविधाओं के प्रति सरकार की प्राथमिकता पर भी टिप्पणी है। एक तरफ अस्पतालों में डॉक्टर ही सुरक्षित नहीं हैं, दूसरी ओर बिहार में डॉक्टर और बुनियादी सुविधाओं के अभाव में बच्चे दम तोड़ रहे हैं। स्थिति इतनी भीषण है कि केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन जब वहां स्थिति का जायजा लेने पहुंचे, उस दौरान भी कुछ बच्चों की मौत हो गई। पिछले कई साल से इसी मौसम में उत्तर बिहार में दिमागी बुखार का प्रकोप देखा जा रहा है, इसके बावजूद न तो इसके कारण की अभी तक ठीक-ठीक पड़ताल की जा सकी है, न इससे निपटने के लिए ढांचागत सुविधाएं बढ़ाई गई हैं। कुछ विशेषज्ञ दिमागी बुखार का कारण मुजफ्फरपुर और उसके आसपास की लीची में व्याप्त विषैले रसायन को बता रहे हैं, जिस कारण खाली पेट लीची खाने वाले गरीब-कुपोषित बच्चे इसके शिकार बन रहे हैं, जबकि स्वास्थ्य विभाग के कुछ अधिकारियों के मुताबिक, चिलचिलाती गर्मी और नमी तथा बारिश के न होने से शरीर में अचानक शुगर की कमी से बच्चों की मौत हो रही है। इस बार पश्चिम बंगाल में जूनियर डॉक्टरों की पिटाई की प्रतिक्रिया में डॉक्टरों की हड़ताल के कारण भी स्थिति इतनी भीषण हो गई है। स्थिति यह है कि मुजफ्फरपुर के जिस एसकेएमसीएच यानी श्रीकृष्ण मेडिकल कॉलेज ऐंड हॉस्पिटल में इन बच्चों का इलाज चल रहा है, वहां के आईसीयू में भी डॉक्टरों का अभाव है। एक बेड पर दो से तीन मरीजों को रखा जा रहा है। केंद्र सरकार के निर्देश के बावजूद विगत पांच साल में एसकेएमसीएच में सौ बेड का विशेष एईएस वार्ड नहीं बन पाया है। इस कारण चार अलग-अलग वार्डों में बच्चों का इलाज चल रहा है। न बच्चों को ठीक से देखा जा रहा है, और न ही उन्हें समय पर दवाएं दी जा रही हैं। पर्याप्त संख्या में डॉक्टर न होने के कारण मरणासन्न बच्चे नर्सों के रहम-ओ-करम पर हैं! उम्मीद करनी चाहिए कि बिहार की यह त्रासदी न केवल हड़ताली डॉक्टरों को काम पर लौटने को प्रेरित करेगी, बल्कि नीतीश सरकार को भी इससे सीख लेते हुए दिमागी बुखार से निपटने के प्रभावी तंत्र की स्थापना के बारे में सोचना चाहिए।

मुख्य राजनयिक के रूप में मोदी

अपने प्रधानमंत्री काल की शुरुआत से ही नरेंद्र मोदी भारत के प्रमुख राजनयिक के रूप में उभरे हैं। मई, 2019 में अगले पांच वर्षों के लिए सरकार चलाने के लिए बड़े पैमाने पर जनादेश मिलने के बाद भारत को वैश्विक मामलों में एक सम्माननीय, तेजी से विकसित और ताकतवर नेता के रूप में स्थापित करने का उनका उत्साह दोगुना हो गया है।

वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री पद के शपथ ग्रहण समारोह में सार्क देशों के शासनाध्यक्षों को आमंत्रित कर उन्होंने कूटनीति की दुनिया और अंतरराष्ट्रीय संबंधों के इतिहास में एक हलचल पैदा कर दी थी। दूसरी बार जनादेश प्राप्त करने के बाद उन्होंने एक दूसरे क्षेत्रीय समूह (बिम्सटेक) के सदस्य देशों को शपथ ग्रहण समारोह में बुलाया, जिनमें कुछ दक्षिण एशियाई पड़ोसी भी शामिल थे। विदेशी आमंत्रितों की सूची में किर्गिस्तान के नेता भी शामिल थे, जिन्हें शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की शिखर बैठक की मेजबानी करनी थी।

अपने दूसरे कार्यकाल की पहली विदेश यात्रा के लिए भी मोदी ने छोटे-से पड़ोसी मुल्क-मालदीव को चुना, जो रणनीतिक रूप से एक महत्वपूर्ण देश है और जिसे भारत द्वारा एक टिकाऊ अर्थव्यवस्था, शांतिपूर्ण लोकतांत्रिक शासन संरचना और समुद्री लुटेरों, आतंकवादियों और नशीले पदार्थों के तस्करों द्वारा उत्पन्न चुनौतियों के सामने अपनी सुरक्षा बनाए रखने के लिए सहायता प्रदान की जा सकती है।

मोदी की मालदीव यात्रा व्यापक रूप से सफल रही, जिससे न केवल उस देश में भारत के बारे में बनती नकारात्मक छवि पर रोक लगी, बल्कि दोनों देशों के बीच सुरक्षा संबंधों को भी मजबूती मिली।

प्रधानमंत्री मोदी जहां पड़ोसियों से बेहतर रिश्ते को ज्यादा महत्व दे रहे हैं, वहीं वैश्विक मंचों से आतंकवाद के खिलाफ और विकास के पक्ष में बात कर रहे हैं।

चिंतामणि महापात्र, अंतरराष्ट्रीय मामलों के विशेषज्ञ

भारत मालदीव में रक्षा बलों के प्रशिक्षण केंद्र और तटीय निगरानी गतिविधियों में सहायता करेगा। कुछ समय के लिए ही सही, प्रधानमंत्री की श्रीलंका की यात्रा का विचार बहुत महत्वपूर्ण था। चर्चों पर आतंकवादी हमले के कारण श्रीलंका ने न केवल पर्यटकों का, बल्कि संभावित निवेशकों का भी भरोसा खो दिया है। प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा ने आश्वस्त किया कि उस द्वीपीय देश में कानून और व्यवस्था की स्थिति सामान्य है। यही नहीं, उस आतंकी हमले के बाद श्रीलंका में किसी भी विदेशी नेता की यह पहली यात्रा थी।

श्रीलंका की यात्रा के तुरंत बाद प्रधानमंत्री मोदी एससीओ (शंघाई सहयोग संगठन) के शिखर सम्मेलन में भागीदारी करने किर्गिस्तान चले गए। वहां उन्होंने शक्तिशाली अंतरराष्ट्रीय नेताओं के साथ मुलाकात की। चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ उनकी द्विपक्षीय वार्ता हुई। ट्रंप प्रशासन के कारण उत्पन्न चुनौतियों के मद्देनजर महाशक्ति बनने के आकांक्षी चीन और पूर्व महाशक्ति देश रूस के साथ, जो फिर से वैश्विक मामलों में शक्तिशाली देश के रूप में उभरा है, भारत के संबंध महत्वपूर्ण हैं। अमेरिका ने चीन के खिलाफ व्यापार युद्ध छेड़कर चीन के निर्यात पर अरबों डॉलर का शुल्क लगा दिया है। ऐसे ही ट्रंप प्रशासन नहीं चाहता कि भारत समेत अन्य देश रूस से सैन्य साजो सामान खरीदें।

चीन भारतीय बाजार में घुसकर अमेरिकी बाजार में हुए अपने नुकसान की भरपाई करना चाहता है। भारत भी ट्रंप प्रशासन की शुल्क नीति से पीड़ित है और भारत तथा चीन के बीच और भी कई साझा मुद्दे हैं। इसी तरह, वाशिंगटन रूस के साथ एस 400 मिसाइल खरीद समझौते को रद्द करने के लिए भारत पर दबाव बना रहा है। इसलिए शी जिनपिंग और पुतिन के साथ प्रधानमंत्री मोदी की बैठक महत्वपूर्ण थी।

प्रधानमंत्री मोदी की हाल की विदेश यात्राओं में दो मुद्दे सबसे प्रमुख रहे हैं। पहला, वह आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए लगातार अंतरराष्ट्रीय सहयोग के लिए प्रयास कर रहे हैं। वास्तव में, आज दुनिया में कोई ऐसा नेता नहीं है, जिसने मोदी से ज्यादा इस मुद्दे को प्राथमिकता दी हो, ताकि आतंकवादी खतरे से निपटने के लिए व्यापक अंतरराष्ट्रीय सहयोग की पहल की जा सके। ट्रंप आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक युद्ध में कम रुचि ले रहे हैं, जबकि अन्य नेता भी इसे संकीर्ण नजरिये से देखते हैं।

माले, कोलंबो और बिश्केक में प्रधानमंत्री मोदी ने आतंकवाद से निपटने में मजबूत सहयोग के प्रस्ताव को आगे बढ़ाया, जिसके बिना सभी विकासात्मक उपलब्धियों के साथ-साथ प्रस्ताव भी खतरे में होंगे। एससीओ बैठक में पाक प्रधानमंत्री इमरान खान की मौजूदगी भी मोदी को आतंकवाद के मुद्दे को मजबूती से उठाने से नहीं रोक पाई। पाकिस्तानी नेतृत्व के साथ बातचीत से इनकार करके प्रधानमंत्री मोदी ने स्पष्ट कर दिया कि आतंकवाद और वार्ता एक साथ नहीं चल सकती।

प्रधानमंत्री मोदी का दूसरा महत्वपूर्ण एजेंडा है विकास। उनके विकास के एजेंडे के साथ ऊर्जा, कनेक्टिविटी और पर्यावरण करीब से जुड़े हैं। उन्होंने भारत के साथ समुद्री संपर्क के लिए मालदीव में एक समझौते पर हस्ताक्षर किए और दक्षिण एशिया को मध्य एशिया से जोड़ने के लिए उत्तर-दक्षिण गलियारे की स्थापना के भारत के प्रस्ताव को और मजबूत बनाने का भी प्रयास किया। यह भारत के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य रहा है, क्योंकि चीन के बेल्ट ऐंड रोड इनिशिएटिव को पूरी तरह से समर्थन देने के लिए भारत के रास्ते में संप्रभुता का मुद्दा आ रहा है, जबकि ईरान पर अमेरिकी प्रतिबंध उत्तर-दक्षिण कॉरिडोर पहल को आकार देने में बाधा पैदा कर रहा है। जहां तक ऊर्जा की बात है, कुछ एससीओ सदस्य देश ऊर्जा उत्पादक हैं और भारत तेल व गैस के लिए अपने संबंधों का लाभ उठाना चाहता है। स्वच्छ ऊर्जा की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने बिश्केक में सौर ऊर्जा विस्तार का मुद्दा उठाया।

दूसरे कार्यकाल के शुरुआती चरणों में प्रधानमंत्री मोदी की विदेश नीति से यह संकेत मिलता है कि भारत अपने निकटतम और दूरस्थ पड़ोसी देशों के साथ गहन सहयोग का रिश्ता रखना चाहता है। खुद को देश का प्रमुख राजनयिक साबित कर और विदेश मंत्री के रूप में पूर्व विदेश सचिव एस. जयशंकर को चुनकर मोदी ने सही फैसला किया है। उम्मीद है कि दूसरे कार्यकाल में उनकी विदेश नीति की उपलब्धियां महत्वपूर्ण होंगी।

अंतर्ध्वनि

>> कमला दास

इसी जन्म में हर तरह का अनुभव हासिल करना चाहती थी

मुझे लगता है कि किसी भी व्यक्ति को उसके अनुभवों से अलग करना मुश्किल है। कोई भी व्यक्ति अपने अनुभवों का समुच्चय होता है। मैं चित्रकला, कविता, कहानी, नाटक के साथ प्रयोग करती रही और एक स्तंभकार के रूप में भी काम किया। इतने सारे अनुभवों के साथ मैं एक पेशेवर लेखक बन गई, लेकिन सिर्फ एक कवि के लिए ऐसा करना मुश्किल है, क्योंकि इस देश में कविता नहीं बिकती है। मुझे जीने के लिए स्तंभकार बनना पड़ा। यह मेरे लिए काफी कठिन रहा है। लेकिन स्तंभ लेखन से मुझे जीवित रहने और खुद को बचाए रखने में मदद मिली। और मुझे इसका कोई पछतावा नहीं है। कुछ लोगों का कहना है कि मुझे किसी एक ही माध्यम पर केंद्रित रहना चाहिए था।

लेकिन मैं अपने जीवन को कई अनुभवों से भरना चाहती थी, क्योंकि मुझे विश्वास नहीं है कि कोई दोबारा जन्म ले सकता है। इसलिए मैं चित्रकार, कवि, एक अच्छी मित्र, एक अच्छी मां-यानी हर तरह का अनुभव यहीं हासिल कर लेना चाहती थी। लेकिन मुझे लगता है कि लेखन के पेश में आने के लिहाज से मैं गलत लिंग में पैदा हो गई। महिलाओं से यह अपेक्षा की जाती है कि वह रसोई घर के दायरे तक ही खुद को सीमित रखे। एक लेखक या कवि के रूप में उसकी भूमिका को समाज स्वीकार नहीं करना चाहता। एक स्त्री को कुछ भी बनने से पहले एक अच्छी पत्नी, एक अच्छी मां के रूप में खुद को साबित करना पड़ता है। और इसका मतलब है वर्षों का इंतजार। लेकिन मेरे पास इंतजार करने का समय नहीं था। मैं लेखन के लिए बिल्कुल अधैर्य थी। इसलिए मैंने जीवन के शुरुआती दौर से ही लिखना प्रारंभ कर दिया। संभवतः मैं सौभाग्यशाली थी कि मेरे पति ने इस तथ्य की सराहना की कि मैं परिवार की आय बढ़ाने की कोशिश कर रही हूं। इसलिए उन्होंने मुझे रात को सारा काम निबटाकर लिखने की अनुमति दी।

-चर्चित लेखिका

मंजिलें और भी हैं

>> डॉ. उदय मोदी

आखिरी सांस तक बुजुर्गों का सहारा बनूंगा

मैं मुंबई के भायंदर इलाके में रहता हूं, और पेशे से आयुर्वेदिक डॉक्टर हूं। मेरे इस काम की शुरुआत करीब बारह वर्ष पहले हुई। मेरी क्लीनिक पर एक बुजुर्ग इलाज के लिए आए। उनकी हालत खराब थी और देखकर लग रहा था कि कई दिनों से कुछ खाया नहीं है। इलाज करने के बाद मैंने उनके लिए जूस और खाना मंगवाया। मेरे व्यवहार से भावुक होकर वह रोने लगे। पूछने पर बताया कि उनका बेटा उन्हें व उनकी पत्नी को खाना नहीं देता। उनकी पत्नी लकवाग्रस्त हैं इसलिए उन्हें देखभाल के लिए घर पर रहना होता है। पर बेटे-बहू के खराब व्यवहार के कारण उनकी हालत बदतर होती जा रही है। बुजुर्ग की बात सुनकर मेरा दिल भर आया। मैंने उनसे कहा कि वह अपना पता दे दें, मेरे घर से हर रोज उनके लिए खाने का डिब्बा आ जाया करेगा। घर आने पर मैंने यह बात पत्नी कल्पना को बताई। वह बोली कि जितने भी लोगों का खाना देना हो, आप बता दें। मैं सुबह बना दिया करूंगी। यह केवल एक बुजुर्ग दंपत्ती की समस्या नहीं होगी, बल्कि मुंबई में ऐसे और भी लोग होंगे। यह बात मेरे दिल में बैठ गई। ऐसे में अन्य जरूरतमंदों तक यह सुविधा पहुंचाने के लिए मैंने बैनर बनवाकर सार्वजनिक स्थलों पर लगवाया। शुरुआत में कुछ बुजुर्गों ने मुझसे संपर्क किया, लेकिन धीरे-धीरे यह संख्या बढ़कर दो सौ से ज्यादा हो गई।

मैं हैरान था कि कैसे बच्चे हैं जो अपने मां-बाप को इस तरह का जीवन जीने पर मजबूर कर सकते हैं।

मैं हैरान था कि कैसे बच्चे हैं, जो अपने मां-बाप को इस तरह का जीवन जीने पर मजबूर कर सकते हैं। मैंने उनमें से कुछ बुजुर्गों के परिजनों से बात करने की कोशिश भी की, पर उन्होंने कहा, क्या हमने आपको बोला कि आप हमारे मां-बाप के लिए खाना दो, आपको क्या पड़ी इन लोगों की मदद करने की। यह सुनकर मुझे बुरा तो जरूर लगा, पर इन बुजुर्गों के लिए कुछ करने का इरादा और भी पक्का हो गया। घर पर इतने सारे लोगों का खाना बनाना थोड़ा मुश्किल था। इसलिए मैंने श्रवण टिफिन सर्विस के नाम से एक किचन शुरू किया। खाना बनाने के लिए तीन-चार लोगों का स्टाफ रखा और फिर एक वैन खरीदी, ताकि सुबह-शाम इन लोगों तक बिना किसी देरी के खाना पहुंचाया जा सके। मेरे दोनों बच्चे हर महीने अपनी पॉकेट मनी से पैसे बचाते हैं, उसे इकट्ठा करते हैं और हर महीने टिफिन सर्विस में लगाने के लिए देते हैं। कई बार स्कूलों के बच्चे मुझसे कहते हैं कि उनके पास पैसे तो नहीं हैं, पर इन बुजुर्गों के लिए कुछ करना चाहते हैं। ऐसे बच्चों को मैं बुजुर्गों के साथ जाकर कुछ वक्त बिताने के लिए कहता हूं। आठ वर्ष की उम्र में एक बार मेरे पिता के दोस्त ने एक गुजराती फिल्म में काम करवाया था। लेकिन पढ़ाई और प्रोफेशन की व्यस्तता से इस पर कभी ध्यान नहीं दिया। फिर अचानक से गुजराती धारावाहिक में काम करने वाले एक व्यक्ति से मेरा संपर्क हुआ, जिसके बाद अभिनय का सिलसिला शुरू हो गया। इससे होने वाली आय को मैं टिफिन सर्विस में लगाता हूं। पिछले कुछ वर्षों से इन बुजुर्गों के लिए एक घर बनवाने का प्रयास कर रहा हूं। इसके लिए मैंने मिलाप वेबसाइट पर एक फंड रेजिंग कैंपेन भी चलाया है। टिफिन भेजने के साथ मैं इनके स्वास्थ्य की भी देखभाल करता हूं। मुझे जनरेशन गैप की सोच समझ में आती है। कई बार बच्चों का अपने मां-बाप से झगड़ा हो जाता है। पर कोई बेटा अपने मां-बाप को खाना तक नहीं दे, यह बात मुझे न तो बारह साल पहले समझ आती थी और न ही आज समझ में आती है। पर अब मुझे बस इतना पता है कि मैं अपनी अखिरी सांस तक इन बुजुर्गों की सेवा करूंगा।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित

अमन बहाली का समय

अराजकता के लंबे दौर के बाद कश्मीर में शांति लाना आसान नहीं होगा, पर नए सिरे से प्रयास करने के लिए समय अच्छा है। शांति बातचीत करने और लोगों का विश्वास जीतने से आती है। सबका साथ, सबका विश्वास की यह महत्वपूर्ण परीक्षा है।

तवलीन सिंह

मैंने कश्मीर घाटी के अच्छे दिन भी देखे हैं और बुरे दिन भी। पिछले महीने मैं यह सोचकर श्रीनगर गई कि बुरे दिनों का दौर देखने को मिलेगा। ऐसा इसलिए कि दिल्ली में विशेषज्ञ पिछले तीन साल से यह प्रचार करते फिर रहे हैं कि इतना बुरा समय कश्मीर घाटी में पहले कभी नहीं रहा। बुरहान वानी के मारे जाने के बाद से मैं कश्मीर नहीं गई थी, क्योंकि उसने अपने हर वीडियो में स्पष्ट किया था कि उसका 'जेहाद' आजादी के लिए नहीं, कश्मीर घाटी में शरीयत लाने के लिए है। मौत के बाद बुरहान वानी कश्मीर में इतना बड़ा हीरो बन गया था कि मुझे यकीन हो गया था कि घाटी में अब कट्टरपंथी इस्लाम का बोलबाला कायम हो गया होगा। मैं उन जगहों में जाना पसंद नहीं करती, जहां जेहादी इस्लाम की तानाशाही कायम हो गई होती है।

सो इस बार यह सोचकर श्रीनगर पहुंची कि वही बुरे दिन देखने को मिलेंगे, जो मैंने बीती सदी के नब्बे के दशक में देखे थे, जब आतंकवादी शराब की दुकानें और सिनमाघरों को जबर्दस्ती बंद करवाते हुए सड़कों पर घूमा करते थे, पांच सितारा होटलों के अंदर पहुंच कर लोगों को धमकाया करते थे। मुझे याद है कि एक दिन मैं ब्रॉड्वे होटल में दोपहर का भोजन कर रही थी, जब कुछ दाढ़ीवाले युवक अंदर आए और मैनेजर को धमकाया कि होटल का बार फौरन बंद नहीं किया गया, तो बुरा होगा। उन युवकों ने न अपना कोई परिचय बताया, न यह बताया कि किस संस्था का आदेश था। केवल यही कहा कि इस्लाम के उसूलों के मुताबिक कश्मीर में शराब पर प्रतिबंध लग गया है। कुछ महीनों बाद वह प्रसिद्ध होटल ही बंद हो गया था और वह सिनमा हॉल भी, जो होटल के कश्मीरी पंडित मालिक चलाया करते थे।

बुरे दिनों की ऐसी यादें लेकर पिछले महीने एक लंबे अरसे के बाद श्रीनगर गई थी। लेकिन आश्चर्य हुआ, जब इस सुंदर शहर में चारों ओर शांति का माहौल दिखा। श्रीनगर शांत तो था, लेकिन उस पर एक उदास-सी वीरानी चादर की तरह बिछी हुई थी। पुलवामा के आत्मघाती जेहादी हमले के बाद श्रीनगर के होटल और हाउसबोट खाली पड़ गए हैं। लोगों से मालूम हुआ कि पुलवामा की घटना से पहले श्रीनगर में इतने सैलानी आ रहे थे कि होटलों में कमरा मिलना मुश्किल था, लेकिन पुलवामा के बाद सब बदल गया। श्रीनगर में मैंने यह भी पाया कि आम कश्मीरी हिंसा और अराजकता के इस लंबे दौर से थक गया है। मैंने आम लोगों से भी बातें कीं और राजनीतिज्ञों से भी, सबने कहा कि अमन-शांति के लिए लोग तरस रहे हैं।

अराजकता के लंबे दौर के बाद कश्मीर घाटी में शांति लाना आसान नहीं होगा, लेकिन नए सिरे से प्रयास करने के लिए समय अच्छा है। प्रयास शुरू होने से पहले प्रधानमंत्री को स्पष्ट करना पड़ेगा कि उनके साथ कोई समझौता नहीं हो सकता, जो घाटी में इस्लामी खिलाफत की स्थापना करना चाहते हैं। हां, उनसे जरूर बातें हो सकती हैं, जो अब भी काल्पनिक आजादी के सपने देख रहे हैं। भारत की सीमाएं तो बदल नहीं सकतीं, पर आजादी का यह आंदोलन चूंकि दशकों से चलता आ रहा है, इसलिए इस आजादी का मतलब समझने की कोशिश किए बिना आगे बढ़ना मुश्किल होगा।

आगे बढ़ने से पहले नरेंद्र मोदी को अपने उन साथियों पर अंकुश लगाना होगा, जो हर दूसरे दिन कहते फिरते हैं कि अनुच्छेद 370 को समाप्त करना कश्मीर समस्या का समाधान है। शांति धमकियों से कभी नहीं आती, शांति बातचीत करने और लोगों का विश्वास जीतने से आती है। सबका साथ, सबका विश्वास की यह महत्वपूर्ण परीक्षा है।

हरियाली और रास्ता

टीचर, छात्र और पर्वतारोही

एक टीचर की कहानी, जिसने बच्चों को डर और विश्वास के बारे में बताया।

राजश्री टीचर की कक्षा में विश्वास और डर पर बात हो रही थी। टीचर ने कहा, जहां डर होता है, वहां विश्वास नहीं होता, और जहां विश्वास होता है, वहां डर नहीं पनपता। छात्रों को बात समझ में आई, पर पूरी तरह नहीं। टीचर कहानी सुनाने लगीं, एक पर्वतारोही कई ऊंचे पर्वतों पर सफलता के झंडे गाड़ चुका था। एक बार वह एक बेहद दुर्गम पहाड़ पर चढ़ाई करने निकला। वह पर्वत एक तरफ से सपाट था, दूसरी तरफ से उसका रास्ता बहुत लंबा था। उसने तय किया कि वह सपाट वाले रास्ते से चढ़ाई करेगा। उसने अपने शेरपा के साथ चढ़ाई शुरू कर दी। चोटी तक पहुंचने में दो दिन और बचे थे कि मौसम विभाग ने मौसम खराब होने की चेतावनी जारी कर दी। शेरपा बोला, इस वक्त जाना ठीक नहीं। लेकिन उसने उसकी बात अनसुनी कर दी और आगे बढ़ता गया। वह चोटी तक पहुंचने के लिए अपने अंतिम पड़ाव पर था। अब जो रास्ता था, वह उसकी जिंदगी का सबसे कठिन रास्ता था-एकदम खड़ा और सीधा। उस वक्त घुप्प अंधेरा हो रहा था। वह केवल अपने अंदाज से ऊपर चढ़ता जा रहा था। एकदम से उसका पैर फिसल गया और वह कई हजार फुट की ऊंचाई से नीचे गिरने लगा। तभी उसे याद आया कि उसकी कमर में एक रस्सी बंधी हुई है। उस रस्सी ने उसे नीचे गिरने से रोक लिया और वह पहाड़ के सहारे लटकने लगा। शेरपा ने उसे ऊपर से आवाज दी, रस्सी काट दो। पर वह बहुत डर गया था। उसके शेरपा ने कई बार उसे रस्सी काट देने के लिए कहा। पर उसने शेरपा की नहीं सुनी। अगले दिन जब शेरपा उसके पास पहुंचा, तो देखा, रात में ठंडी हवाओं के तूफान ने उसकी जान ले ली। वह जमीन से सिर्फ पांच फीट की ऊंचाई पर लटक रहा था। अगर वह रस्सी काट देता, तो जीवित बेस कैंप में वापस लौट सकता था।

जहां डर होता है, वहां विश्वास कभी नहीं पनपता।

खुली खिड़की

आर्ट गैलरी

दुनिया के अलग-अलग देशों में कलाप्रेमी मौजूद हैं। कला के प्रदर्शन और संरक्षण के लिए आर्ट गैलरी बनाई जाती है। एक रिपोर्ट के मुताबिक सबसे ज्यादा आर्ट गैलरी न्यूयॉर्क में मौजूद हैं।

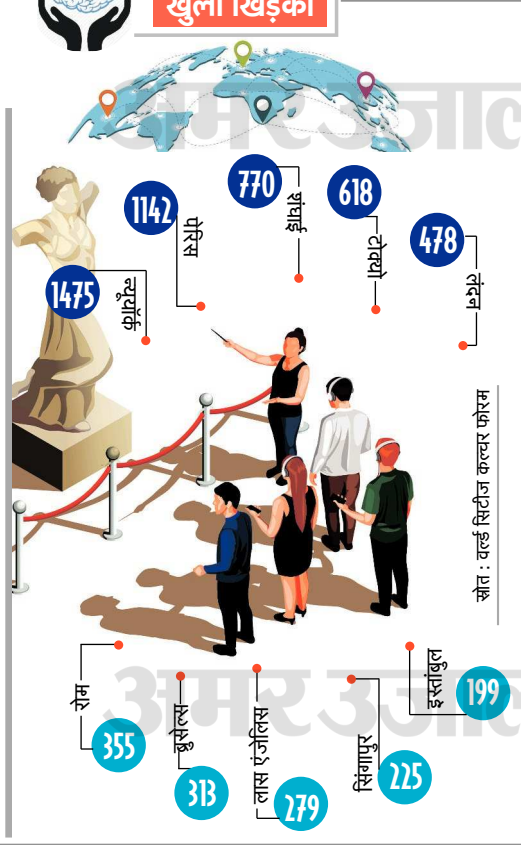

सत्संग

शांति कोई नहीं चाहता

भगवान बुद्ध रोज की तरह अपने भक्तों को उपदेश दे रहे थे। तभी एक व्यक्ति उनके पास आया और बोला, 'भगवन! लोग शांति चाहते हैं, पर शांति कहीं नहीं है। मेरी जिज्ञासा यह है कि लोगों को आखिर शांति क्यों नहीं मिलती? बुद्ध ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, ऐसा तुम्हें लगता है। लेकिन यह तुम्हारा भ्रम है। सच यह है कि लोग शांति चाहते ही नहीं। उस व्यक्ति को बुद्ध से इस तरह के जवाब की उम्मीद नहीं थी। उसने तुरंत उत्तर दिया, यह आप क्या कह रहे हैं भगवन? हर व्यक्ति शांति का भूखा है और हर पल उसकी खोज में ही लगा रहता है। उस समय आश्रम में बहुत भीड़ थी। लोग बैठकर बुद्ध और उस व्यक्ति के बीच के वार्तालाप को सुन रहे थे। तभी बुद्ध ने एक आदमी को बुलाकर पूछा, कहो भाई, तुम क्या चाहते हो? वह व्यक्ति बोला, भगवन, मेरा परिवार काफी बड़ा है। मेरी आमदनी कम है और हर समय धन के लिए किल्लत मची रहती है। हमें बस कुछ धन मिल जाए, तो जीवन सुखी हो जाए। बुद्ध ने पहले आदमी की ओर मुड़कर देखते हुए कहा, मैंने कहा था न कि शांति कोई नहीं चाहता। सबकी अपनी अपनी इच्छाएं और आवश्यकताएं हैं। वे उन्हीं की पूर्ति के लिए हर पल कामना करते हैं। यह कहकर बुद्ध चुप हो गए। वह व्यक्ति भी बुद्ध को प्रणाम कर चुपचाप वहां से चला गया। उसके सामने जीवन का सत्य उजागर हो गया था।

-संकलित